8 पंचलाइट

फणीश्वरनाथ 'रेणु'

(जन्म : सन् 1921, मृत्यु : सन् 1977)

बिहार में पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना नामक गाँव में फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म हुआ था। उनकी शिक्षा भारत और नेपाल में हुई। वे 1942 ई. में स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े। 1950 ई. में नेपाली क्राति आंदोलन में भी हिस्सा लिया। सही मायने में रेणुजी कर्मशील सारस्वत थे। 1952-53 में भीषण रूप से रोगग्रस्त रहने के बाद लेखन कार्य की ओर झुके।

रेणुजी ने हिन्दी में आंचलिक कथा की नींव रखी। बेमिसाल आंचलिक उपन्यास 'मैला आँचल' को गोदान के बाद दूसरा सर्वश्रेष्ठ उपन्यास घोषित किया गया। 'परतीपारिकथा', 'जुलूस', 'दीर्घतपा', 'कितने चौराहे', 'पलटूबाबू रोड़' आदि गणमान्य उपन्यास हैं तो 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी' अग्निखोर, अच्छे आदमी आदि कहानी संग्रह हैं। रेणुजी ने 'ऋणजल धनजल', 'नेपाली क्रांतिकथा', 'वन तुलसी की गंध', 'श्रुत अश्रुत पूर्व', नामक रिपोतार्ज भी लिखे हैं। उनकी कहानी मारे गये गुलफाम से तीसरी कसम नामक फिल्म बनी 'अग्निखोर', 'अच्छे आदमी', आदि प्रमुख कथा संग्रह हैं। रेणुजी को 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित भी किया गया।

'पंचलाइट' रेणुजी की गिनीचुनी प्रसिद्ध कहानियाँ में से एक हैं। पंच के न्याय दंड-जुरमाना, नयी चीज के आनेपर धर्म-ध्यान और कीर्तन के माध्यम से ग्रामजीवन का बखूबी चित्रण हुआ है; गाँव के अनपढ़ लोगों में अज्ञान जातिगत द्वेष को उजागर किया है। गोधन पेट्रोमेक्स जलाता है, तो टोले की इज्जत बढ़ जाती हैं। सम्मान स्वरूप गोधन के गुनाहों को जातिगत पंचायत माफ कर देती है। सबके हृदय में नया प्रकाश भर जाता है।

पिछले पंद्रह महीने से दंड-जुरमाने के पैसे जमा करके महतो टोली के पंचों ने पेट्रोमेक्स खरीदा है इस बार, रामनवमी के मेले में। गाँव में सब मिलाकर आठ पंचायतें हैं। हरेक जाति की अलग-अलग 'सभाचट्टी' हैं। सभी पंचायतों में दरी, जाजिम, सतरंजी और पेट्रोमेक्स हैं - पेट्रोमेक्स, जिसे गाँववाले पंचलाइट कहते हैं।

पंचलाइट खरीदने के बाद पंचों ने मेले में ही तय किया - दस रुपए जो बच गए हैं, इससे पूजा की सामग्री खरीद ली जाए - बिना नेम-टेम के कल-कब्जेबाली चीज का पुन्याह नहीं करना चाहिए। अंग्रेज बहादुर के राज में भी पुल बनाने से पहले बलि दी जाती थी।

मेले से सभी पंच दिन-दहाड़े ही गाँव लौटे; सबसे आगे पंचायत का छड़ीदार पंचलाइट का डिब्बा माथे पर लेकर और उसके पीछे, सरदार, दीवान और पंच वगैरह। गाँव के बाहर ही बाह्मणटोले के फुटंगीझा ने टोक दिया - 'कितने में लालटेन खरीद हुआ महतो'

''देखते नहीं हैं पंचलैट है! ब्राह्मणटोली के लोग ऐसे ही ताब करते हैं। अपने घर की ढिबरी को भी बिजली-बत्ती कहेंगे और दूसरों के पंचलैट को लालटेन''

टोले-भर के लोग जमा हो गए। औरत-मर्द बूढ़े-बच्चे सभी काम-काज छोड़कर दौड़े आए, ''चल रे चल! अपना पंचलैट आया है, पंचलैट!''

छड़ीदार अगनू महतो रह-रहकर लोगों को चेतावनी देने लगा- ''हाँ, दूर से, ज़रा दूर से! छू-छा मत करो, ठेस न लगे!''

सरदार ने अपनी स्त्री से कहा, ''साँझ को पूजा होगी; जल्दी से नहा-धोकर चौका-पीढ़ी लगाओ।''

टोले की कीर्तन-मंडली के मूलगैन ने अपने भगतिया पच्छकों को समझाकर कहा, ''देखो, आज पंचलैट की रोशनी में कीर्तन होगा। बेताले लोगों के पहले ही कह देता हूँ, आज यदि आखर धरने में डेढ़-बेढ़ हुआ, तो दूसरे दिन से एकदम बैकाट!''

औरतों की मंडली में गुलरी काकी गोसाई का गीत गुनगुनाने लगी। छोटे-छोटे बच्चों ने उत्साह के मारे बेवजह शोरगुल मचाना शरू किया।

सूरज डूबने के एक घंटा पहले से ही टोले-भर के लोग सरदार के दरवाजे पर आकर जमा हो गए-पंचलैट, पंचलैट!

पंचलैट के सिवा और कोई गप नहीं, कोई दूसरी बात नहीं। सरदार ने गुड़गुड़ी पीते हुए कहा, ''दुकानदार ने पहले सुनाया, पूरे पाँच कौड़ी पाँच रुपया। मैंने कहा कि दुकानदार साहेब, यह मत समझिए कि हम लोग एकदम देहाती हैं। बहुत-बहुत पंचलैट देखा हैं। इसके बाद दुकानदार मेरा मुँह देखने लगा। बोला लगता है आप जाति के सरदार हैं! ठीक है, जब आप सरदार होकर खुद पंचलैट खरीदने आए हैं तो जाइए पूरे पाँच कोड़ी में आपको दे रहे हैं।''

दीवानजी ने कहा, ''अलबत्ता चेहरा परखनेवाला दुकानदार है। पंचलैट का बक्सा, दुकान का नौकर देना नही चाहता था। मैंने कहा, ''देखिए दुकानदार साहेब, बिना बक्सा पंचलैट कैसे ले जाएँगे! दुकानदार ने नौकर को डाँटते हुए कहा, क्यों रे! दीवान जी की आँख के आगे 'धुरखेल' करता है; दे दो बक्सा!''

टोले के लोगों के अपने सरदार और दीवान को श्रद्धा -भरी निगाहों से देखा। छड़ीदार ने औरतों की मंडली में सुनाया- ''रास्ते में सन्न-सन्न बोलता था पंचलैट!''

लेकिन ऐन मौके पर 'लेकिन' लग गया! रूदल शाह बनिए की दुकान से तीन बोतल किरासन तेल आया और सवाल पैदा हुआ, पंचलैट को जलाएगा कौन!

यह बात पहले किसी के दिमाग में नहीं आई थी। पंचलैट खरीदने के पहले किसी ने न सोचा। खरीदने के बाद भी नहीं। अब पूजा की सामग्री चौके पर सजी हुई है, कीर्तनिया लोग खोल-ढोल-करताल खोलकर बैठे हैं और पंचलैट पड़ा हुआ है। गाँववालों ने आज तक कोई ऐसी चीज नहीं खरीदी, जिसमें जलाने-बुझाने का झंझट हो। कहावत हैं न, माई रे, गाय लूँ ? तो दुहे कौन ? लो मज़ा! अब इस कल-कब्जेवाली चीज को कौन बाले!

यह बात नहीं कि गाँव-भर मे कोई पंचलैट बालनेवाला नहीं। हरेक पंचायत में पंचलैट है, उसके जलानेवाले जानकार हैं। लेकिन सवाल है कि पहली बार नेम-टेम करके, शुभ-लाभ करके, दूसरी पंचायत के आदमी की मदद से पंचलैट जलेगा ? इससे तो अच्छा है कि पंचलैट पड़ा रहे। जिंदगी-भर ताना कौन सहे! बात-बात में दूसरे टोले के लोग कूट करेंगे-तुम लोगों का पंचलैट पहली बार दूसरे के हाथ से! न, न! पंचायत की इज्ज़त का सवाल है। दूसरे टोले के लोगों से मत कहिए।

चारों ओर उदासी छा गई! अँधेरा बढ़ने लगा। किसी ने अपने घर में आज ढिबरी भी नहीं जलाई थी। आज पंचलैट के सामने ढिबरी कौन बालता है!

सब किए-कराए पर पानी फिर रहा था। सरदार दीवान और छड़ीदार के मुँह में बोली नहीं! पंचों के चेहरे उत्तर गए थे। किसी ने दबी हुई आवाज में कहा, ''कल-कब्जेवाली चीज़ का नखरा बहुत बड़ा होता है।''

एक नौजवान ने आकर सूचना दी- ''राजपूत टोली के लोग हँसते-हँसते पागल हो रहे हैं। कहते हैं, कान पकड़कर पंचलैट पाँच बार उठो-बैठो, तुरंत जलने लगेगा।''

पंचों ने सुनकर मन-ही-मन कहा, ''भगवान ने हँसने का मौका दिया है हँसेंगे नहीं ?'' एक बूढ़े ने आकर खबर दी, ''रूदल साह बनिया भारी बतंगड़ आदमी है। कह रहा है, पंचलैट का पंपू ज़रा होशियारी से देना!''

गुलरी काकी की बेटी मुनरी के मुँह में बार-बार एक बात आकर मन में लौट जाती है। वह कैसे बोले ? वह जानती है कि गोधन पंचलैट जलाना जानता है। लेकिन, गोधन का हुक्का-पानी पंचायत से बंद है। मुनरी की माँ ने पंचायत में फरियाद की थी कि गोधन रोज़ उसकी बेटी को देखकर 'सनम-सनम' वाला सलीमा का गीत गाता है - 'हम तुमसे मोहोब्बत करके सनम!' पंचों की निगाह पर गोधन बहुत दिन से चढ़ा हुआ था। दूसरे गाँव से आकर बसा है गोधन, और अब तक टोले के पंचों को पान-सुपारी

खाने के लिए भी कुछ नहीं दिया। परवाह ही नहीं करता है। बस, पंचों को मौका मिला। दस रूपया जुरमाना! न देने से हुक्का-पानी बंद। आज तक गोधन पंचायत से बाहर है। उससे कैसे कहा जाए! मुनरी उसका नाम कैसे ले ? और उधर जाति का पानी उतर रहा है।

मुनरी ने चालाकी से अपनी सहेली कनेली के कान में बात डाल दी - ''कनेली! चिगो, चिध, चिन!'' कनेली मुस्कुराकर रह गई- ''गोधन तो बंद है!'' मुनरी बोली, ''तू कह तो सरदार से!''

''गोधन जानता है पंचलैट जलना।'' कनेली बोली।

''कौन, गोधना ? जानता हैं जलना। लेकिन।''

सरदार ने दीवान की ओर देखा और दीवान ने पंचों की ओर। पंचों ने एकमत होकर हुक्का-पानी बंद किया है। सलीमा का गीत गाकर आँख का इशारा मारनेवाले गोधन से गाँव-भर के लोग नाराज़ थे। सरदार ने कहा, ''जाति की बंदिश क्या, जबकि जाति की इज्जत ही पानी में बही जा रही है! क्यों जी दीवान ? ''

दीवान ने कहा, ''ठीक है!''

पंचों ने भी एक स्वर में कहा, ''ठीक है। गोधन को खोल दिया जाए।''

सरदार ने छड़ीदार को भेजा। छड़ीदार वापस आकर बोला, ''गोधन आने को राजी नहीं हो रहा है। कहता हैं, पंचों की क्या परतीत है। कोई कल-कब्जा बिगड़ गया तो मुझे दंड-जुरमाना भरना पड़ेगा।''

छड़ीदार ने रोनी सूरत बनाकर कहा, ''किसी तरह गोधन को राजी करवाइए, नहीं तो कल से गाँव में मुँह दिखाना मुश्किल हो जाएगा।

गुलरी काकी बोली ''जरा मैं देखूँ कहके।''

गुलरी काकी उठकर गोधन के झोंपड़े की ओर गई 'और गोधन को मना लाई'। सभी के चेहरे पर नई आशा की रोशनी चमकी। गोधन चुपचाप पंचलैट में तेल भरने लगा। सरदार की स्त्री ने पूजा की सामग्री के पास चक्कर काटती हुई बिल्ली को भगाया। कीर्तन-मंडली का मूलगैन मुरछल के बालों को सँवारने लगा। गोधन ने पूछा, ''इसपिरिट कहाँ है ? बिना इसपिरिट के कैसे जलेगा ?''

लो मजा! अब यह दूसरा बखेड़ा खड़ा हुआ! सभी ने मन-ही-मन सरदार, दीवान और पंचों की बुद्धि पर अविश्वास प्रकट किया- बिना बूझे-समझे काम करते हैं वे लोग! उपस्थित जन-समूह में फिर मायूसी छा गई। लेकिन गोधन बड़ा होशियार लड़का है। बिना इसपिरिट के ही पंचलैट जलाएगा- ''थोड़ा गरी का तेल ला दो!'' मुनरी दौड़कर गई और एक मलसी गरी का तेल ले आई। गोधन पंचलैट में पम्प देने लगा।

पंचलैट की रेशमी थैली मे धीरे-धीरे रोशनी आने लगी। गोधन कभी मुँह से फूँकता कभी पंचलैट की चाबी घुमाता। थोड़ी देर के बाद पंचलैट से सनसनाहट की आवाज निकलने लगी और रोशनी बढ़ती गई, लोगों के दिल का मैल दूर हो गया। गोधन बड़ा काबिल लड़का है।

अंत में पंचलाइट की रोशनी से सारी टोली जगमगा उठी तो कीर्तनिया लोगों ने एक स्वर में महावीर स्वामी की जय - ध्वनि के साथ कीर्तन शुरू कर दिया। पंचलैट की रोशनी में सभी के मुस्कुराते हुए चेहरे स्पष्ट हो गए। गोधन ने सबका दिल जीत लिया। मुनरी ने हसरत-भरी निगाह से गोधन की ओर देखा। आँखें चार हुईं और आँखों-ही-आँखों में बातें हुई - कहा-सुना माफ करना ! मेरा क्या कुसूर!

सरदार ने गोधन को बहुत प्यार से पास बुलाकर कहा ''तुमने जाति की इज्जत रखी है। तुम्हारा सात खून माफ। खूब गाओ सलीमा का गाना''

गुलरी काकी बोली, ''आज रात मेरे घर खाना गोधन।''

गोधन ने फिर एक बार मुनरी की ओर देखा । मुनरी की पलकें झुक गईं।

कीर्तनिया लोगों ने एक कीर्तन समाप्त कर जयध्वनि की–जय हो ! जय हो ! पंचलैट के प्रकाश में पेड़–पौधों का पत्ता–पत्ता पुलकित हो रहा था।

शब्दार्थ-टिप्पणी

जुरमाना न्यायालय या पंचायत द्वारा अपराधी को दिया गया अर्थ–दंड, **महतो** मुखिया, **कौड़ी** बीस, **ढिबरी** छोटा–सा दीपक, **गरी** नारियल, **मलसी** तेल रखने का एक छोटा बर्तन (कटोरी), **नेम–टेम** नियम–टाइम, **पुन्याह** प्रारंभ, **मुलगैन** नायक, **बेवजह** अकारण, **घुरखेल** धोखा, आँख में धूल झोंकना

मुहावरे–कहावतें

भाई रे गाय तो लूँ ? तो दुहे कौन ? किसी वस्तुओके उपयोग की विधिका ज्ञान न होना, **पानी फिरना** सब व्यर्थ होना **हुक्का पानी बंद होना** जाति या समाज से बहिष्कृत, **पानी उतरना** इज्जत खत्म होना, **दिल का मैल दूर होना** कड़वाहट, दुर्भावना खत्म होना, **आँखें चार होना** आँखें मिलना, **आँखों–आँखों में बात होना** इशारों में बात होना

स्वाध्याय

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए :

(1) गाँव में कुल कितनी पंचायतें थीं ?

(क) चार (ख) पाँच (ग) आठ (घ) छः

(2) पंचलाइट कितने रुपये में खरीदा गया ?

(क) पाँच कोड़ी (ख) दो कोड़ी (ग) सात कोड़ी (घ) सौ कोड़ी

(3) पंचलाइट जलाने के लिए मुनरी क्या लाती है ?

(क) किरासीन (ख) गरी का तैल (ग) स्पीरीट (घ) पेट्रोल

(4) गोधन पर कितना रुपया जुरमाना लगाया गया था ?

(क) दस रुपया (ख) बीस रुपया (ग) पचास रुपया (घ) सौ रुपया

2. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दिजिए :

(1) महतो टोली ने पेट्रोमेक्स खरीदने के लिए पैसे का इन्तजाम कैसे हुआ था ?

(2) औरतों की मंडली में गुलरी काकी क्या कर रही थी ?

(3) रूदल साह बनिए की दुकान से क्या खरीदा गया ?

(4) पेट्रोमेक्स के बारे में जाति के लोगों की क्या समस्या थी ?

3. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में दीजिए :

(1) गाँव की प्रत्येक पंचायत के पास कौन-कौन सी चीजें थीं ?

(2) छड़ीदार के हाथ में क्या था ? उसके पीछे कौन चल रहा था ?

(3) मुनरी ने अपनी सहेली कनेली के कान में क्या कहा ? उसका क्या असर हुआ ?

(4) गोधन के द्वारा पेट्रोमेक्स जलाने पर पंचों ने क्या किया ?

4. निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर पाँच से छः पंक्तियों में लिखिए :

(1) टोली के सरदार की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए।

(2) पेट्रोमेक्स जलाने में क्या-क्या यत्न किये जाते हैं ? अपने शब्दों में लिखिए।

(3) पंचलाइट आने के बाद लोगों ने समूदाय, पंचो की किस कमी की ओर संकेत लिए है ?

5. आशय स्पष्ट कीजिए :

(1) 'कल कब्जेवाली चीज का नखरा बहुत बड़ा होता है।'

(2) 'जाति की बंदिश क्या जबकि जाति की इज्जत पानी में बही जा रही है।'

(3) 'कहा सुना माफ करना! मेरा क्या कसूर!'

योग्यता-विस्तार

विद्यार्थी-प्रवृत्ति

- फणीश्वरनाथ रेणु की संवादिया कहानी पढ़िए।
- इस कहानी से आँचलिक शब्दावली ढूंढकर लिखिए

शिक्षक-प्रवृत्ति

- अपने आसपास की लोक संस्कृति से छात्र का परिचय करवाएँ।

●